# दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,बिलासपुर मंडल

अंक - 11 वां वर्ष - 2025

# बिलासपुर मंडल दर्पण

संरक्षक
राजमल खोईवाल
मंडल रेल प्रबंधक

मार्गदर्शन
चंद्रभूषण
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
राघवेंद्र सिंह
प्रभारी राजभाषा अधिकारी एवं
सहायक कार्मिक अधिकारी

## रेल पर दोहे

संतोष मिरी "हेम"

बिना थके चलते चले, देखो प्यारा रेल।
छुक-छुक करते देख लो, करें सभी से मेल।।

सुदृण करें राजस्व को, बड़ा सभी में अंग।
इससे होती आय तो, दिखे बजट में रंग।।

पहिया इसका मत थमे, करते सभी प्रयास।
जीवन रेखा देश की, यह है सबसे खास।।

बच्चों को भाये बहुत, छुक-छुक की आवाज।
खेल खिलौना सा लगे, छेड़े मधुरम साज।।

सफर सुहाना यह बना, करें हृदय में राज।
करो सवारी मन लगा, होगा उस पर नाज।।

लंबी- लंबी रेल का, बिछा हुआ है जाल।
भ्रमण कराये देश भर, लगता बड़ा कमाल।।

भार खींचता लाख टन, अनूठी है रफ्तार।
तत्पर है सहयोग को, करे आमजन प्यार।।

नाम लोहपथगामिनी, चलता अपने पाथ।
देख सभी जन तीव्रता, बजता ताली हाथ।।

लोको पायलट-गुड्स
मुख्य क्रू नियंत्रक
दपूम रेलवे,कोरबा

## बधार

श्री ओ पी सिंह

बधार में
अब बसंत के
उपरांत
गेहूं के लहलहाते फसल,
पतझड़ के बाद,
नये आवरण
ओढ़े बुढ़े पेर,
पास में कहीं अरहर,
मक्के के भी उपजते खेत,
सरसो की पक्व कटाई
आनेवाली गर्मी की आहट
के मध्य
साथ ही उगी
अनचाही झाड़ी
कहते हुए
शायद यह गीत
चलो जगो
और समेटो
हमें आज ही
क्योंकि अब होली
भी गयी
रंग भी छटा
अतिथि भी गये,
चलो अब
संवारो बधार
भरो भंडार ।

सहायक परिचालन प्रबंधक,
द.पू.म.रेलवे, बिलासपुर

## समीक्षा

सोमप्रभा तिवारी

जितना सरल रहा ये जीवन,उतनी कठिन प्रतीक्षा तेरी।
ढाई आखर हर पन्ने पर,फिर भी हुई समीक्षा मेरी।।
एक समर्पित प्रेम ये मेरा,
तुमसे ही था शाम सवेरा।
हाथों की इन रेखाओं में ,
तुमको ही हर बार उकेरा।

काश की अंतस तुम पढ़ लेते,इतनी सी थी इच्छा मेरी।
ढाई आखर हर पन्ने पर,फिर भी हुई समीक्षा मेरी।।
जब कुछ पल हम साथ चले थे,
कितने पत्थर शूल मिले थे।
खरपतवार हटाएं हमनें,
तब जाकर कुछ फूल खिले थे।

मैं केवल मनके चुन लेती,ऐसी ना थी दीक्षा मेरी ।
ढाई आखर हर पन्ने पर,फिर भी हुई समीक्षा मेरी ।।
तुम चिल्लाए,चुप्पी मेरी,
आंसू की थी झड़ी घनेरी ।
मेरा प्रीत समझ पाने में,
तुमने क्यों की इतनी देरी?
क्यों जाने अनजाने में भी,होती रही परीक्षा मेरी ।
ढाई आखर हर पन्ने पर,फिर भी हुई समीक्षा मेरी।।

ट्रैक मेंटेनर-।।।
एसएसई(रेलपथ)
द.पू.म.रेलवे ,करगी रोड

# फादर कामिल बुल्के: एक विदेशी भक्त जिसने हिंदी को अपना लिया

फादर कामिल बुल्के बेल्जियम से आए एक ऐसे मिशनरी थे, जिन्होंने भारत में आकर अपनी जिंदगी को हिंदी भाषा, संस्कृति और साहित्य को समर्पित कर दिया। उनका जीवन और कार्य भारतीय साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में एक अनोखा और प्रेरणादायक उदाहरण है।

**जीवन और कार्य**:

कामिल बुल्के का जन्म 1909 में बेल्जियम में हुआ था। 1930 के दशक में, वे एक मिशनरी के रूप में भारत आए और यहीं पर उन्होंने अपनी शेष जीवन व्यतीत की। भारत आकर उन्हें हिंदी भाषा और संस्कृति का गहरा प्रेम हो गया। उन्होंने हिंदी को इतनी गहराई से सीखा कि वे 'तुलसीदास' और 'वाल्मीकि' के महान कवियों के अनुयायी बन गए।

**हिंदी भाषा के प्रति समर्पण**:

फादर बुल्के ने हिंदी के प्रति अपने समर्पण को कई रूपों में प्रदर्शित किया। उन्होंने हिंदी साहित्य का गहन अध्ययन किया और हिंदी शब्दावली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका सबसे उल्लेखनीय कार्य है अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश, जो आज भी हिंदी शिक्षा और अनुवाद के क्षेत्र में एक मानक के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस शब्दकोश ने हिंदी बोलने वालों और अंग्रेजी पढ़ने वालों के बीच एक पुल का काम किया।

**सम्मान और अध्ययन**:

फादर बुल्के के असाधारण योगदान को भारत सरकार ने 1974 में 'पद्म भूषण' सम्मान से सम्मानित किया, जो भारत के तीसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मानों में से एक है। यह सम्मान उनके हिंदी साहित्य के प्रति उनकी सेवा, शिक्षा क्षेत्र में उनके योगदान और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने के लिए दिया गया।

**शैक्षिक योगदान**:

वह रांची विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर भी रहे और वहाँ उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका शिक्षण विधि और शोध कार्य हिंदी को एक वैज्ञानिक आधार पर समझने, सिखाने और प्रसारित करने का प्रयास था।

**विरासत**:

फादर कामिल बुल्के की विरासत आज भी जीवित है। उनके कार्यों से हिंदी भाषा की समृद्धि में वृद्धि हुई है और उनका शब्दकोश आज भी बहुतों के लिए एक मूल्यवान संसाधन है। यह कोश आज भी सरकारी कार्यालयों में मानक शब्दकोश माना जाता है। उनका जीवन भाषा, संस्कृति और शिक्षा के प्रति समर्पण का एक अद्भुत उदाहरण है।

फादर कामिल बुल्के ने भारत में हिंदी को अपनाकर, उसे समझकर और उसके प्रचार में जो योगदान दिया, उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि भाषा और संस्कृति की सीमाएं मनुष्यों को जोड़ने की बजाय उन्हें विभाजित करने में असमर्थ हैं। उनकी कहानी एक वैश्विक संदेश है कि प्रेम, ज्ञान और समर्पण से हर भाषा और संस्कृति को आत्मसात किया जा सकता है ।

**साभार - इंटरनेट**

**आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए । भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।**

**महावीर प्रसाद द्विवेदी**

# वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का वर्तमान और भविष्य

******

भारत के ललाट की बिंदी।
भावों की गहरी कालिंदी।
अतीत गौरव की परिभाषा,
प्यारी हिंदी न्यारी हिंदी।
(डा.देवधर महंत)

हिंदी एक विश्व व्यापी भाषा है।विश्व के लगभग सभी देशों तक हिंदी किसी न किसी रूप में पहुंच चुकी है। आज विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या एक अरब तीस करोड़ के पार पहुंच चुकी है। जो दुनिया में बोली जाने वाली किसी भी भाषा से अधिक है।एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं स्कूलों में हिंदी का अध्ययन -अध्यापन होता है। अमेरिका के 12 विश्वविद्यालयों और 40 से अधिक महाविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है।

हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता का बड़ा कारण भारत का डिजिटल माध्यमों के जरिए भाषा का विस्तार और उसके फलस्वरूप उपभोक्ता बाजार, हिंदी सिनेमा और भारतीय संस्कृति को जानने -समझने की ललक है। माइक्रोसॉफ्ट के जरिए हिंदी का विकास और सोसल मीडिया,यू ट्यूब, ब्लॉग आदि के जरिए हिंदी की वैश्विक उपस्थिति ने भारत के प्रति लोगों की जिज्ञासा को बढ़ाया और वैश्विक स्तर पर हिंदी को नई पहचान दी।

भारतीय ज्ञान -विज्ञान को लेकर पश्चिमी देशों में जो जिज्ञासा का भाव था उसे पंख मिल गए। भारत अपनी समृद्ध वैदिक संस्कृति के विविध संदर्भों के कारण विश्व भर के लोगों का केंद्र रहा है। भारत की मजबूत आध्यात्मिक परंपरा और विश्व बंधुत्व की परिकल्पना भी शेष विश्व के नागरिकों को आकर्षित करती रही है।

आज हिंदी का अपना एक वैश्विक बाजार निर्मित हो चुका है। इस वैश्विक बाजार में हिंदी सबकी जरूरत है। इसलिए बड़ी-बड़ी कंपनियों के मालिक अपने कर्मचारियों को अन्य भाषाओं के साथ - साथ हिंदी सीखने पर जोर दे रहे हैं। डिजिटल दौर में हिंदी दुनिया में बाजार और व्यवहार की भाषा बनती जा रही है।

डेनमार्क के एक विश्वविद्यालय की हिंदी की प्रोफेसर रजनी बहल बताती है कि " पहले सीटें भरनी बहुत मुश्किल होती थीं । लोग सिर्फ चाइनीज और जापानीज सीखने आते थे। मगर अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार बढ़ जाने से लोग हिंदी सीखने लगे हैं।"

हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। कंप्यूटर पर भाषाओं की तकनीक के जानकार मानते हैं कि इंटरनेट पर अब अंग्रेजी से ज्यादा हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाएं फल फूल रहीं हैं। इंटरनेट की सबसे बड़ी कंपनी गूगल ने बीते दिनों एक साक्षात्कार में कहा कि इंटरनेट पर अगले 30 करोड़ यूजर्स अंग्रेजी नहीं बल्कि भारतीय भाषाएं बोलने वाले आएंगे।

हम आशान्वित हैं कि -

**" हिंदी सारी दुनिया का श्रृंगार बनेगी।**
**तय है मानवता का वह गलहार बनेगी।**

**राकेश कुमार श्रीवास**
**लोको पायलट गुड्स**
**मुख्य क्रू नियंत्रक,बिलासपुर**

**वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।**

**पीर मुहम्मद मूनिस**

# अतीत, वर्तमान और भविष्य के चिंतक - राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कालजयी मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के महान कवि थे,जिनका जन्म 03 अगस्त 1886 को चिरगांव झांसी उत्तर प्रदेश में हुआ था। पिता श्री रामचरण और माता श्रीमती कौशल्या देवी की ये तीसरी संतान थे । इनका पालन-पोषण भक्तिमय आध्यात्मिक वातावरण में हुआ इसलिए संस्कार रुप में यह आचरण में समाहित हो गया और आगे चलकर यही इनके लेखन में भी दृष्टिगोचर होता है। घर पर ही इन्हें संस्कृत, हिंदी और बंग्ला की शिक्षा दी जाती थी । 12 वर्ष की आयु में ही ब्रजभाषा में उन्होंने कविता लिखना आरंभ कर दिया था। फिर महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आए और उन्हीं की प्रेरणा से खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने का अथक प्रयास किया । ऐसे समय में जब ब्रजभाषा एक समृद्ध काव्य भाषा के रूप में साहित्य के सिंहासन में विराजमान थी उसे छोड़कर खड़ी बोली में लिखना चुनौतीपूर्ण कार्य था । पर इन्होंने वह भी किया और यही हिंदी साहित्याकाश में उनके महती योगदान के रूप में आज भी वर्णित है । फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और जयद्रथ वध, भारत भारती , पंचवटी , यशोधरा, साकेत, द्वापर, नहुष आदि काव्य संग्रह की रचना करते गए। राष्ट्र प्रेम, पवित्रता, नैतिकता और मानवीय संबंधों की रक्षा उनके काव्य के अनिवार्य गुण रहे।

आगे चलकर लाला लाजपतराय,बाल गंगाधर तिलक,मदन मोहन मालवीय, गणेश शंकर विद्यार्थी की चेतना से भी ये अनुप्राणित रहे और उस समय की उनकी कविताओं में उनका क्रांतिकारी स्वर दृष्टिगत होता है । फिर महात्मा गांधी जी के संपर्क में आने के बाद गांधीवाद के व्यवहारिक पक्ष और सुधारवादी आंदोलन के समर्थक बने । 1936 में गांधी जी ने ही उन्हें ' राष्ट्र कवि ' के संबोधन से विभूषित किया । 1952 -1964 तक राज्य सभा के सदस्य मनोनीत किए गए । 1954 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें पद्मभूषणसे सम्मानित किया गया । 12 दिसंबर 1964 को इस महान कवि ने अपनी अंतिम सांसें लीं । पर कहते हैं "साहित्यकार युगद्रष्टा होता है तो कालजयी भी होता है"। अपनी रचनाओं के माध्यम से वे आज भी साहित्याकाश में प्रकाशित हैं।

जीवन के पक्ष को देखने के पश्चात साहित्य का पुनरावलोकन आवश्यक है जिस काव्य के कारण वे जनता के प्राणों में रच बस गए वह अनमोल कृति 'भारत भारती 'ही है । इसका रचना काल 1912 है। प्रभात फेरियों , राष्ट्रीय आंदोलनों , शिक्षा संस्थानों, प्रातः कालीन प्रार्थना सभाओं में इसके पद गांव-नगर गली-चौराहों में गाए जाने लगे -

**मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती।**
**भगवान भारतवर्ष में गूंजें हमारी भारती।।**

उपरोक्त पंक्तियां भारतवर्ष के गौरवशाली इतिहास पर गर्व करने पर विवश करता है और हमारा मस्तक खुद -ब-खुद मां भारती के चरणों में झूक जाता है ।मैथिलीशरण गुप्त जी ने स्वयं कहा कि - भारत भारती में वह संजीवनी शक्ति है जो किसी भी जाति, संप्रदाय के लोगों को उत्साह और जागरण का संदेश दे सकती है। मुझे भी पढ़ कर यही लगा कि यह केवल काव्य संग्रह नहीं है वरन् स्वदेश प्रेम को जगाते हुए वर्तमान और भावी कठिनाइयों से उबरने के लिए समाधान ढूंढने का एक सफल प्रयास है यानी इसमें प्रश्न भी है, उत्तर भी है और निष्कर्ष भी । इसकी लोकप्रियता का आलम यह रहा कि इस किताब की प्रतियां रातों-रात बिक जाती थीं। मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारत भारती क्यों लिखी ?इसका कारण बताते हैं कि -' भारत की पूर्व और वर्तमान दशा में बहुत अंतर है । यह देश विद्या,कला कौशल और सभ्यता में संसार का शिरोमणि था ।

आज वही आर्य जाति पग-पग पर परायों का मुंह ताक रही है। परंतु क्या हम सदा अवनति में पड़े रहेंगे? क्या लोग अपने मार्ग से हट गए हैं और वापस नहीं जा सकते ? पर संसार में ऐसा कोई काम नहीं है जो उद्यम से सिद्ध न हो सके और उद्यम के लिए उत्साह की आवश्यकता होती है । इसी उत्साह को,इसी मानसिक वेग को उत्तेजित करने के लिए कविता एक उत्तम साधन है। इसी अभाव की पूर्ति के लिए मैंने इस पुस्तक को लिखने का साहस किया है।' किसी लेखक के भूत भविष्य और वर्तमान को देखने ..साधने और संजोने का यह अद्वितीय प्रयास था ।

इन्होंने देश के गौरवपूर्ण अतीत को प्रस्तुत करने के साथ -साथ, वर्तमान दशा पर चिंतन और भविष्य को भी भव्य रूप में प्रस्तुत किया। ठीक उसी तरह जैसे परिवार का मुखिया अपने अतीत के विरासत को संभालता है,उसे वर्तमान में संजोता है और भविष्य को हस्तांतरित करता है। उन्होंने लिखा भी है –

**मैं अतीत नहीं भविष्यत भी हूं तुम्हारा।**
**इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।**

**डॉ सुनीता मिश्रा**
**शिक्षाविद/साहित्यकार**
**बिलासपुर,छत्तीसगढ़**

## एक से सौ तक संख्यावाचक शब्दों का मानक रूप

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 एक | 21 इक्कीस | 41 इकतालीस | 61 इकसठ | 81 इक्यासी |
| 2 दो | 22 बाईस | 42 बयालीस | 62 बासठ | 82 बयासी |
| 3 तीन | 23 तेईस | 43 तैंतालीस | 63 तिरसठ | 83 तिरासी |
| 4 चार | 24 चौबीस | 44 चवालीस | 64 चौंसठ | 84 चौरासी |
| 5 पांच | 25 पच्चीस | 45 पैंतालीस | 65 पैंसठ | 85 पचासी |
| 6 छह | 26 छब्बीस | 46 छियालीस | 66 छियासठ | 86 छियासी |
| 7 सात | 27 सत्ताईस | 47 सैंतालीस | 67 सड़सठ | 87 सतासी |
| 8 आठ | 28 अट्ठाईस | 48 अड़तालीस | 68 अड़सठ | 88 अठासी |
| 9 नौ | 29 उनतीस | 49 उनचास | 69 उनहत्तर | 89 नवासी |
| 10 दस | 30 तीस | 50 पचास | 70 सत्तर | 90 नब्बे |
| 11 ग्यारह | 31 इकतीस | 51 इक्यावन | 71 इकहत्तर | 91 इक्यानवे |
| 12 बारह | 32 बत्तीस | 52 बावन | 72 बहत्तर | 92 बानवे |
| 13 तेरह | 33 तैंतीस | 53 तिरपन | 73 तिहत्तर | 93 तिरानवे |
| 14 चौदह | 34 चौंतीस | 54 चौवन | 74 चौहत्तर | 94 चौरानवे |
| 15 पंद्रह | 35 पैंतीस | 55 पचपन | 75 पचहत्तर | 95 पंचानवे |
| 16 सोलह | 36 छत्तीस | 56 छप्पन | 76 छिहत्तर | 96 छियानवे |
| 17 सत्रह | 37 सैंतीस | 57 सत्तावन | 77 सतहत्तर | 97 सतानवे |
| 18 अठारह | 38 अड़तीस | 58 अट्ठावन | 78 अठहत्तर | 98 अठानवे |
| 19 उन्नीस | 39 उनतालीस | 59 उनसठ | 79 उनासी | 99 निन्यानवे |
| 20 बीस | 40 चालीस | 60 साठ | 80 अस्सी | 100 सौ |

# कुम्भ मेला

'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ “घड़ा, सुराही, बर्तन” है। यह वैदिक ग्रन्थों में पाया जाता है। इसका अर्थ, अक्सर पानी के विषय में या पौराणिक कथाओं में अमरता (अमृत) के बारे में बताया जाता है। मेला शब्द का अर्थ है, किसी एक स्थान पर मिलना, एक साथ चलना, सभा में या फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना । यह शब्द ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में भी पाया जाता है। इस प्रकार, कुम्भ मेले का अर्थ है “अमरत्व का मेला” है।

कुम्भ मेला भारत में आयोजित होने वाला एक विशाल मेला है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु हर बारहवें वर्ष प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में से किसी एक स्थान पर एकत्र होते हैं और नदी में पवित्र स्नान करते हैं। प्रत्येक 12 वें वर्ष के अतिरिक्त प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के बीच छह वर्ष के अन्तराल में अर्धकुम्भ भी होता है; 2013 के कुंभ के बाद 2019 में प्रयाग में अर्धकुम्भ मेले का आयोजन हुआ था और अब 2025 में पुनः कुंभ मेले का आयोजन हुआ ।

ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार यह मेला पौष पूर्णिमा के दिन आरंभ होता है और मकर संक्रान्ति इसका विशेष ज्योतिषीय पर्व होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं । मकर संक्रान्ति के होने वाले इस योग को "कुम्भ स्नान-योग" कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार इस दिन खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है।

## ज्योतिषीय महत्व

पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा नदी के जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अन्तरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुम्भ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। हालाँकि सभी हिन्दू त्योहार समान श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाए जाते है, पर यहाँ अर्ध कुम्भ तथा कुम्भ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है।

## पौराणिक महत्व

कुम्भ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर सम्पूर्ण देवता दैत्यों के साथ सन्धि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए ।

अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयन्त अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयन्त का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयन्त को पकड़ा। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। इस परस्पर मारकाट के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। उस समय चन्द्रमा ने घट से प्रस्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शान्त करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया।

इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अन्त किया गया। अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरन्तर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। अतएव कुम्भ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुम्भ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुम्भ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं है। जिस समय में चन्द्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चन्द्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, उस समय कुम्भ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी, वहाँ-वहाँ कुम्भ पर्व होता है।

## विशेष दिन

- **पौष पूर्णिमा , मकर संक्रान्ति , मौनी अमावस्या , वसन्त पंचमी ,माघी पूर्णिमा महाशिवरात्रि**

**साभार - इंटरनेट**

### राजभाषा संवैधानिक प्रावधान से संबंधित प्रश्न:-

| | | |
|---|---|---|
| 1. | संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में कब स्वीकार किया ? | 14 सितंबर 1949 |
| 2. | हिंदी दिवस कब मनाया जाता है ? | 14 सितंबर |
| 3. | संविधान के किन अनुच्छेदों में राजभाषा संबंधी प्रावधान दिये गये हैं ? | अनुच्छेद 120,210 तथा 343 से 351 तक |
| 4. | संविधान के किन भागों में राजभाषा संबंधी प्रावधान दिये गये हैं ? | भाग 5 , 6 एवं भाग 17 में |
| 5. | संविधान के किस भाग में राजभाषा आयोग के गठन संबंधी प्रावधान है ? | अनुच्छेद 344 (1) |
| 6. | संविधान के किस अनुच्छेद के अधीन संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया ? | अनुच्छेद 344 (4) |
| 7. | संविधान के अनुच्छेद 344 (4) अनुसार संसदीय राजभाषा समिति में कुल कितने सदस्य होते हैं ? | 30 तीस |
| 8. | संविधान के अनुच्छेद 344 (4) अनुसार संसदीय राजभाषा समिति में लोक सभा के कुल कितने सदस्य होते हैं ? | 20 बीस |
| 9. | संविधान के अनुच्छेद 344 (4) अनुसार संसदीय राजभाषा समिति में राज्य सभा के कुल कितने सदस्य होते हैं ? | 10 दस |
| 10. | अनुच्छेद 344 (1) के अधीन राजभाषा आयोग का गठन कब किया गया ? | 07 जून 1955 |
| 11. | राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ? | बी. जी. खरे |
| 12. | संविधान के अनुच्छेद 343 (2) के अनुसार कितने समय के लिए संघ के राजकीय प्रयोजनों हेतु अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने की छूट दी गयी थी ? | संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष तक के लिए |

# राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियाँ

## राजभाषा पखवाड़ा - 2024 के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

# राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियाँ

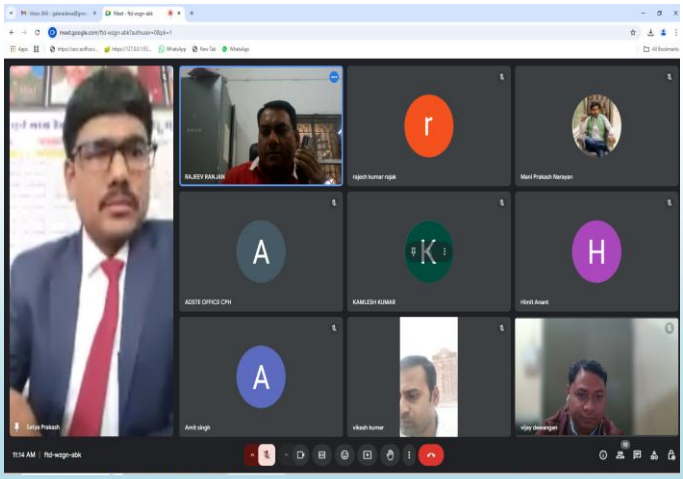

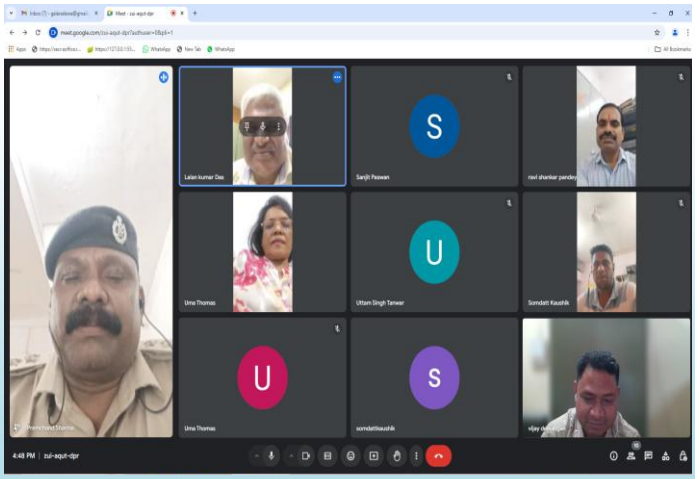

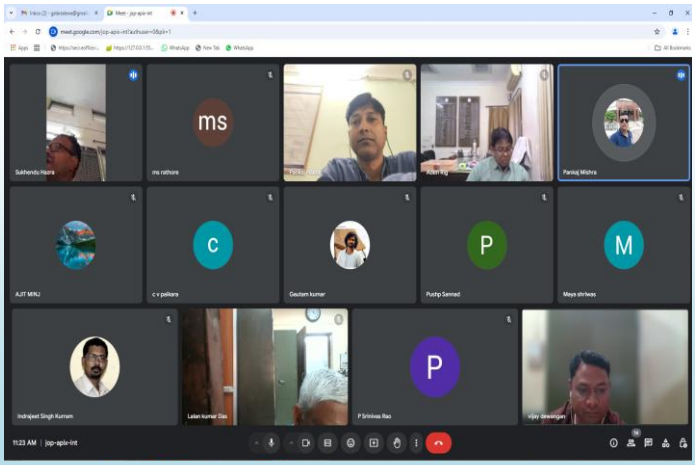

# राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

# बिलासपुर मंडल की विभिन्न गतिविधियां

# सेक्रो, बिलासपुर मंडल की विभिन्न गतिविधियां